ऊंट रेगिस्तान का जहाज



जॉन वाटर्स, चित्र: रेनॉल्ड रफ़िन्स

ऊंट एक व्यावहारिक जानवर है. यहाँ तक कि उसकी लंबी पलकें भी एक ज़रूरी उद्देश्य को पूरा करती हैं. वह रेगिस्तान में यात्रा करते हुए एक सप्ताह या उससे अधिक समय तक बिना पानी के जीवित रह सकता है और फिर एक बार में 90 लीटर पानी पीकर अपनी प्यास बुझा सकता है. और अगर उसे गर्म और सूखी ज़मीन पर खाने के लिए कुछ नहीं मिले, तो वह अपने कूबड़ में जमा चर्बी का उपयोग कर ज़िंदा रह सकता है. इन कारणों से ऊंट कई रेगिस्तानी समुदायों की सबसे मूल्यवान संपत्तियों में से एक बन गया है.

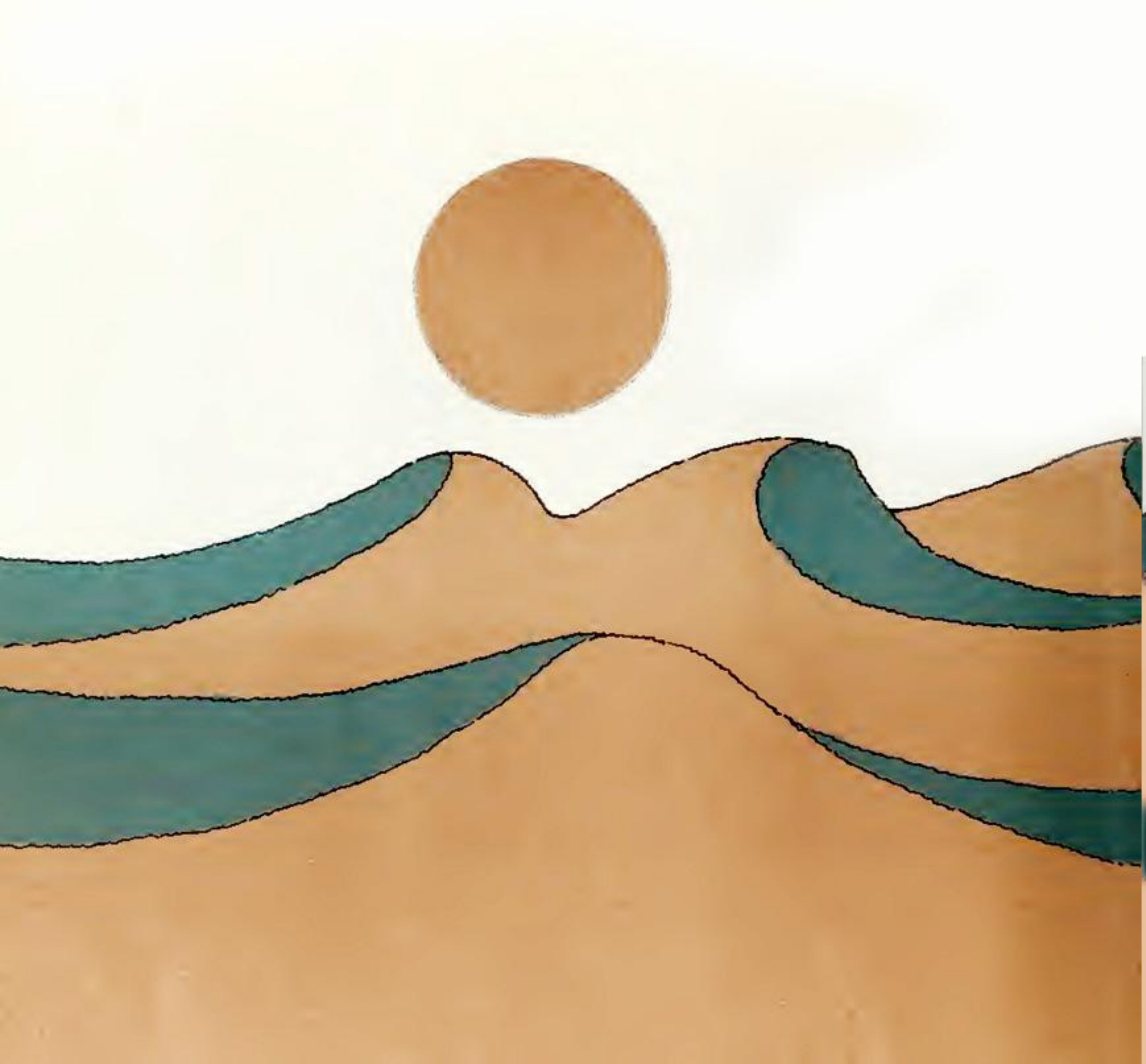
जॉन वाटर्स बताते हैं कि ऊंट रेगिस्तान जैसी कठोर परिस्थितियों में भी कैसे जीवित रह सकता है. जिन बच्चों ने न तो ऊंट देखे हैं और न ही रेगिस्तान, वे इस असामान्य जानवर के तथ्यात्मक विवरण को पढ़कर मोहित हो जाएँगे.

ऊंट

रेगिस्तान का जहाज

जॉन वाटर्स

चित्र: रेनॉल्ड रफ़िन्स



ऊंट

रेगिस्तान के जहाज

जॉन वाटर्स

चित्र: रेनॉल्ड रफ़िन्स





ऊंट वहाँ रहते हैं जहाँ गर्मी और सूखापन होता है. ऊंट रेगिस्तान में रहते हैं. लोग ऊंटों पर सवारी करते हैं. ऊंट भारी बोझ भी ढोते हैं. वे कालीन और नारियल, खजूर और पाम-ऑइल, नमक, अनाज, सभी प्रकार की चीजें ढोते हैं. ऊंटों को "रेगिस्तान का जहाज" कहा जाता है.

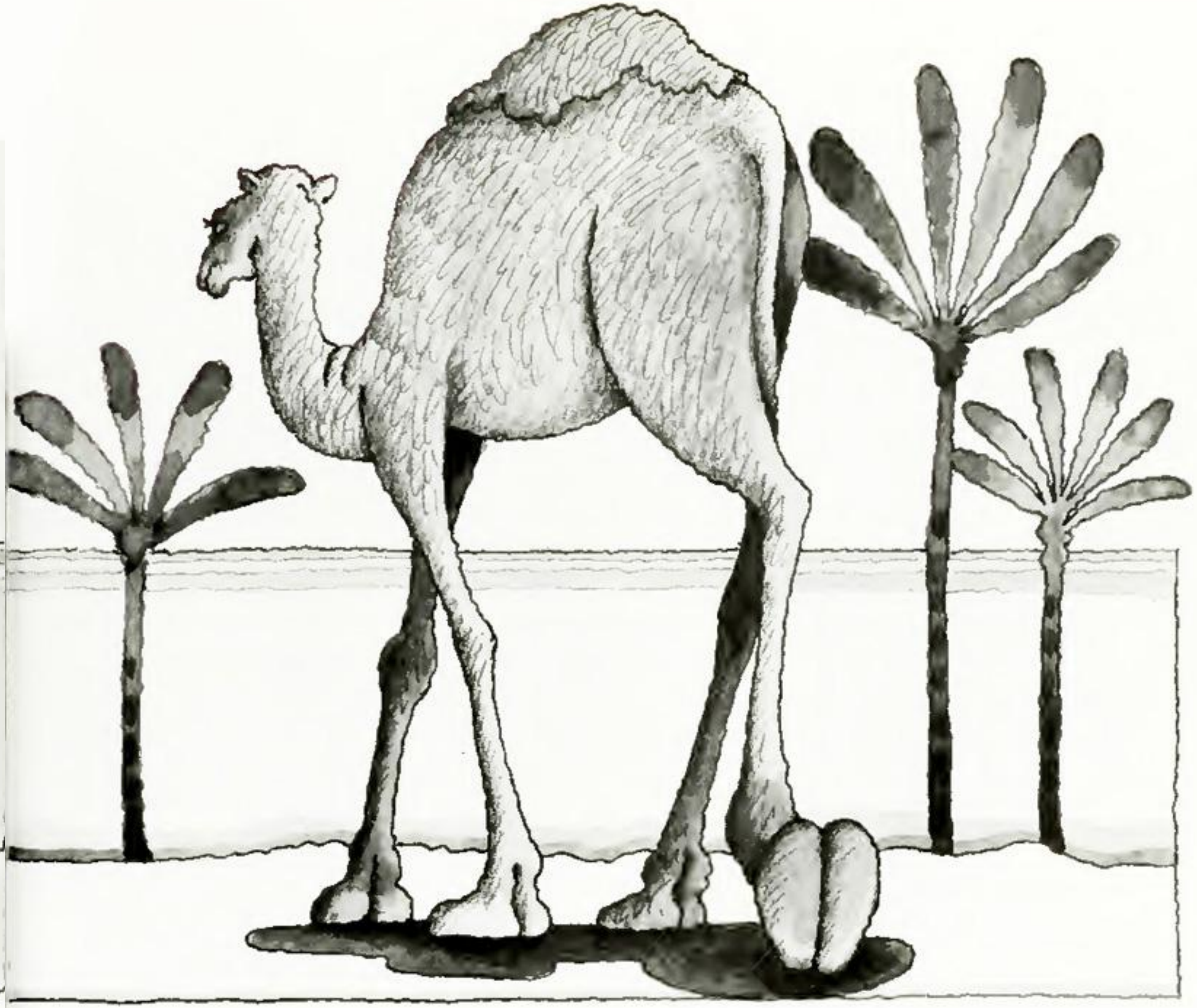




क्या कभी आप रेत में चले हैं? क्या आपके पैर रेत में नीचे धंसे हैं?

ऊंट रेत में आसानी से चल सकते हैं. उनके चौड़े, मुलायम, गद्देदार पैर उन्हें रेत में धंसने या चट्टानों पर फिसलने से बचाते हैं.





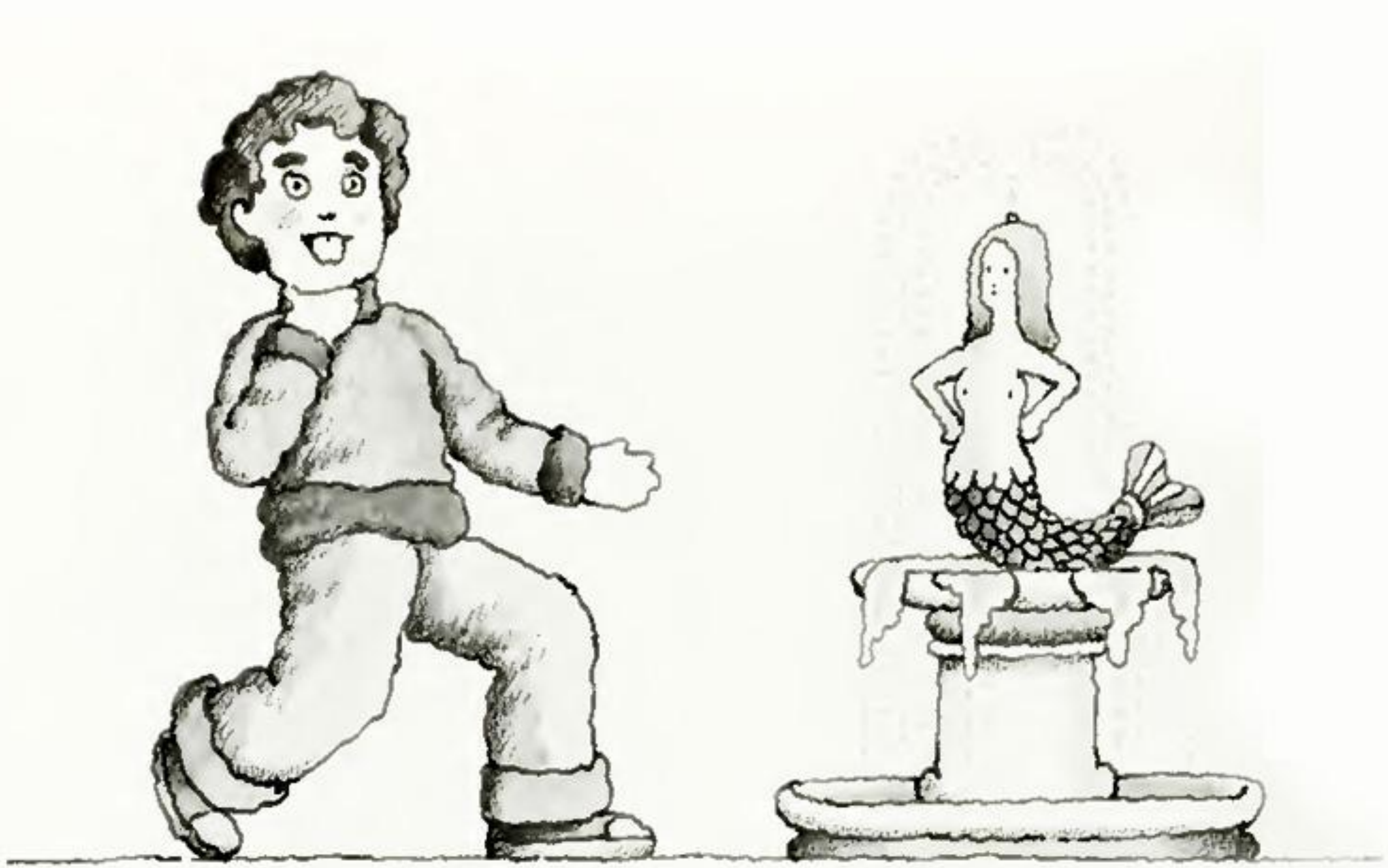
क्या कभी रेत या मिट्टी आपकी आँखों में गई है?

ऊंटों की पलकें लंबी और भारी होती हैं जो रेत को उनकी आँखों में जाने से बचाती हैं.

क्या कभी रेत या धूल आपके मुँह में या आपकी नाक में चली गई है? ऊंट अपने नथुने बंद कर सकते हैं. फिर रेत उनकी नाक में नहीं जा सकती है.



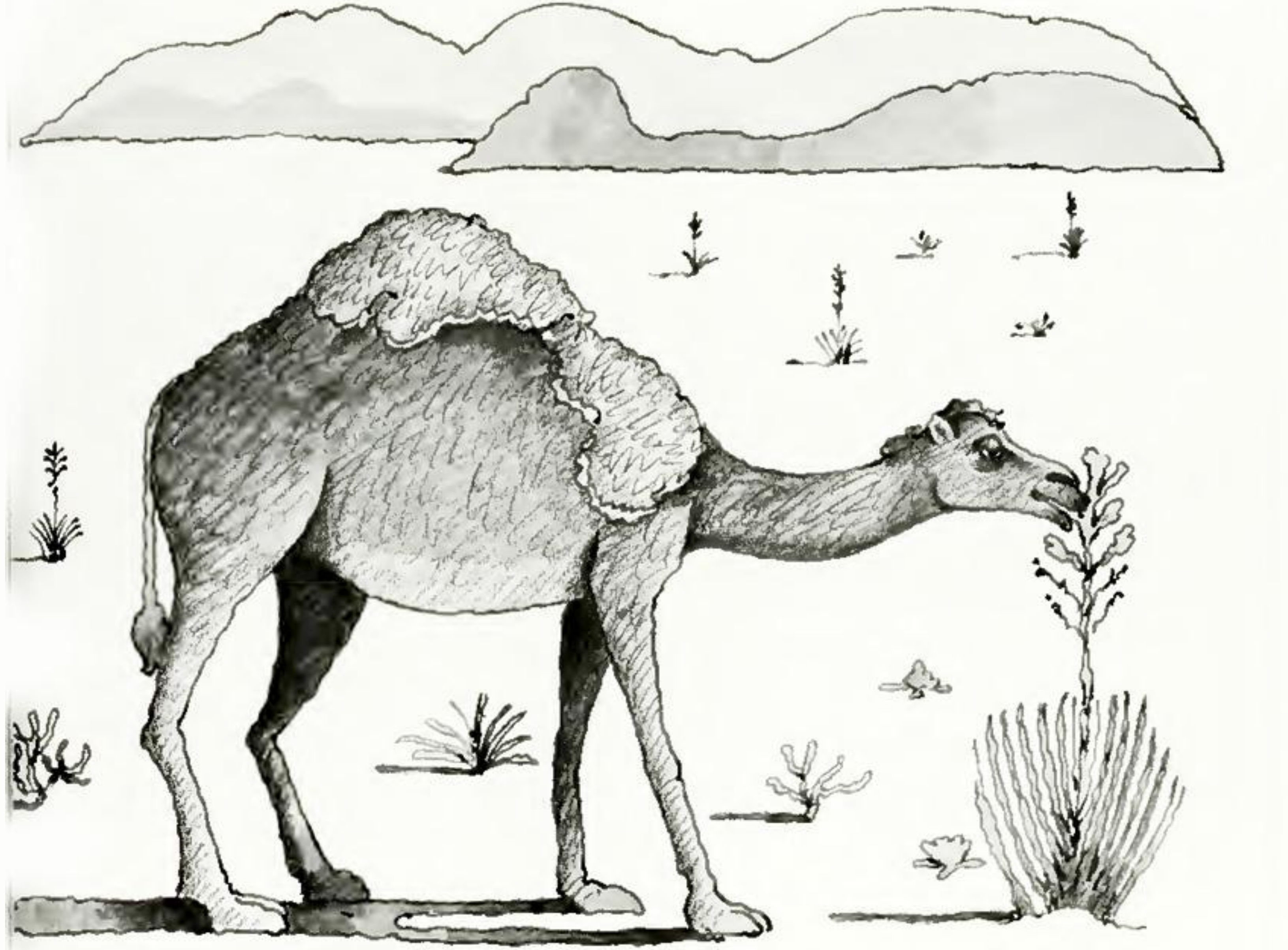


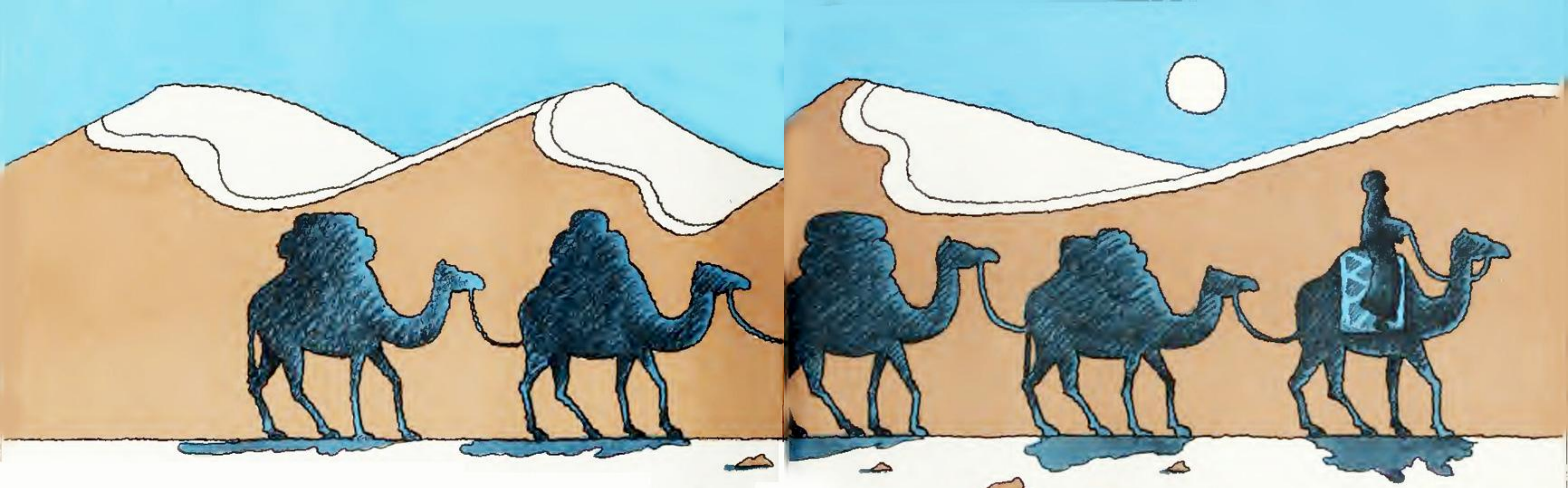


जब आप कुछ घंटों तक पानी नहीं पीते हैं, तो आपको प्यास लगती है. ऊंटों को इतनी जल्दी प्यास नहीं लगती है. गर्मियों में, जब बहुत तेज़ गर्मी होती है, तो भी ऊंट आठ दिनों तक बिना पानी पिए रह सकते हैं.

सर्दियों में कुछ ऊंट आठ हफ़्तों तक बिना पानी पिए रह सकते हैं.

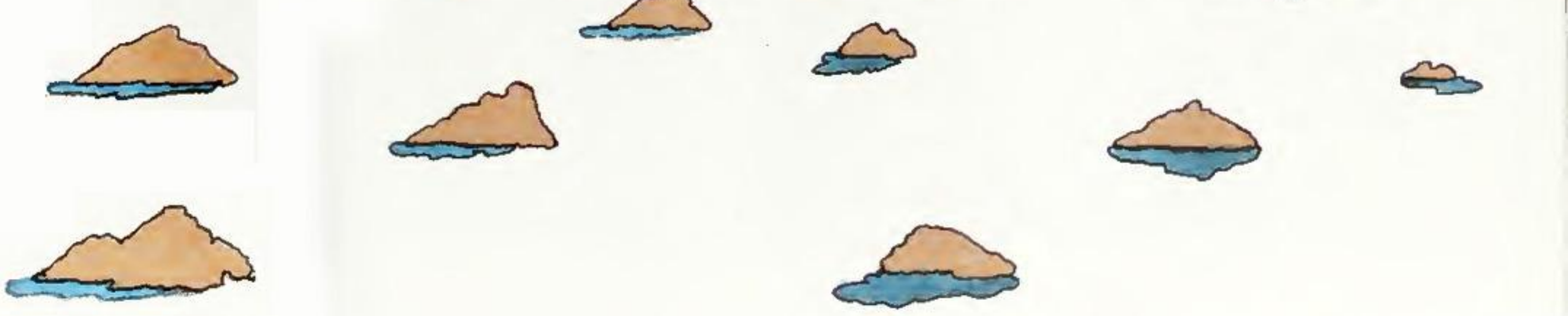
तब वे रसीले पौधे और झाड़ियाँ खाकर पानी की ज़रूरत पूरी करते हैं.





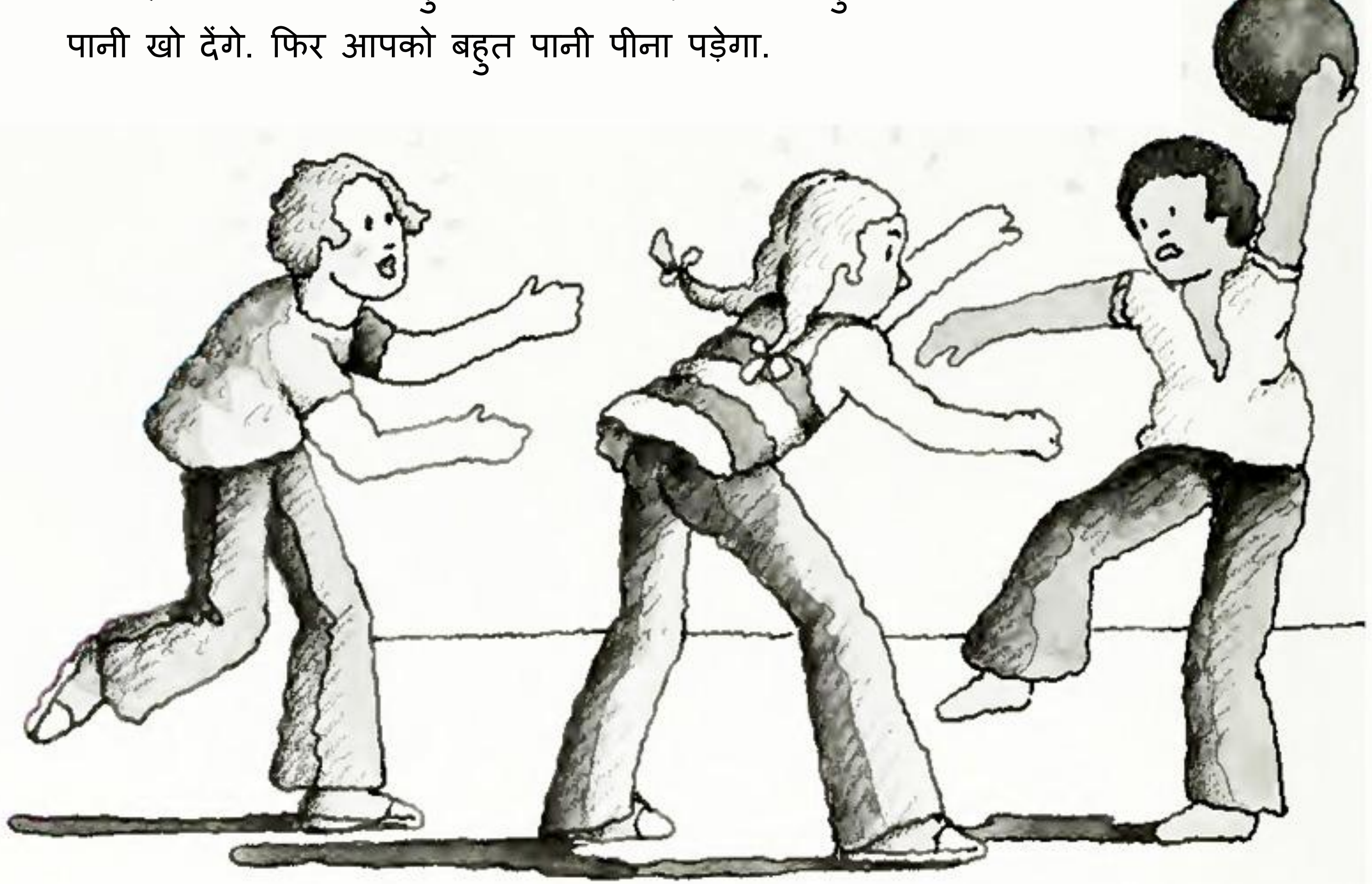
बहुत गर्म मौसम में कोई आदमी पानी के बिना सिर्फ़ दो या तीन दिन ही जीवित रह सकता है.

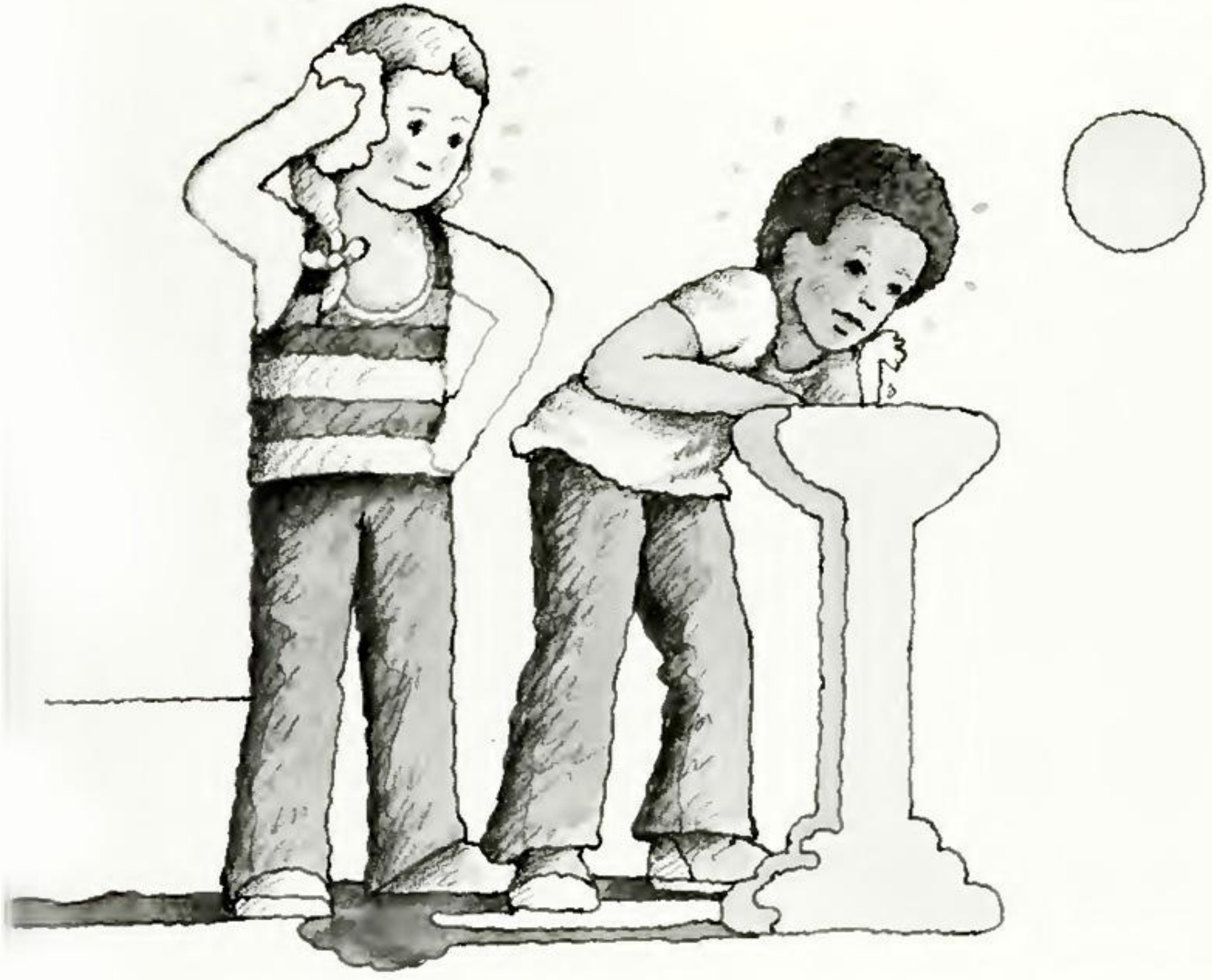
रेगिस्तान में एक गर्म दिन में, रेत में किसी चट्टान का तापमान 150 डिग्री फारेनहाइट तक पहुंच सकता है. अगर ऊंट का भी इतना तापमान होगा तो शायद वह मर जाएगा. आप भी मर जाएंगे. लेकिन ऊंट गर्म रेगिस्तान में भी ठंडा रहता है.



ऊंट को पसीना आता है. पसीने के कारण वह ठंडा रहता है. आप भी इस तरह से ठंडे रहते हैं. पसीना आपके शरीर के तापमान को लगभग 98.6 डिग्री फारेनहाइट बनाए रखता है.

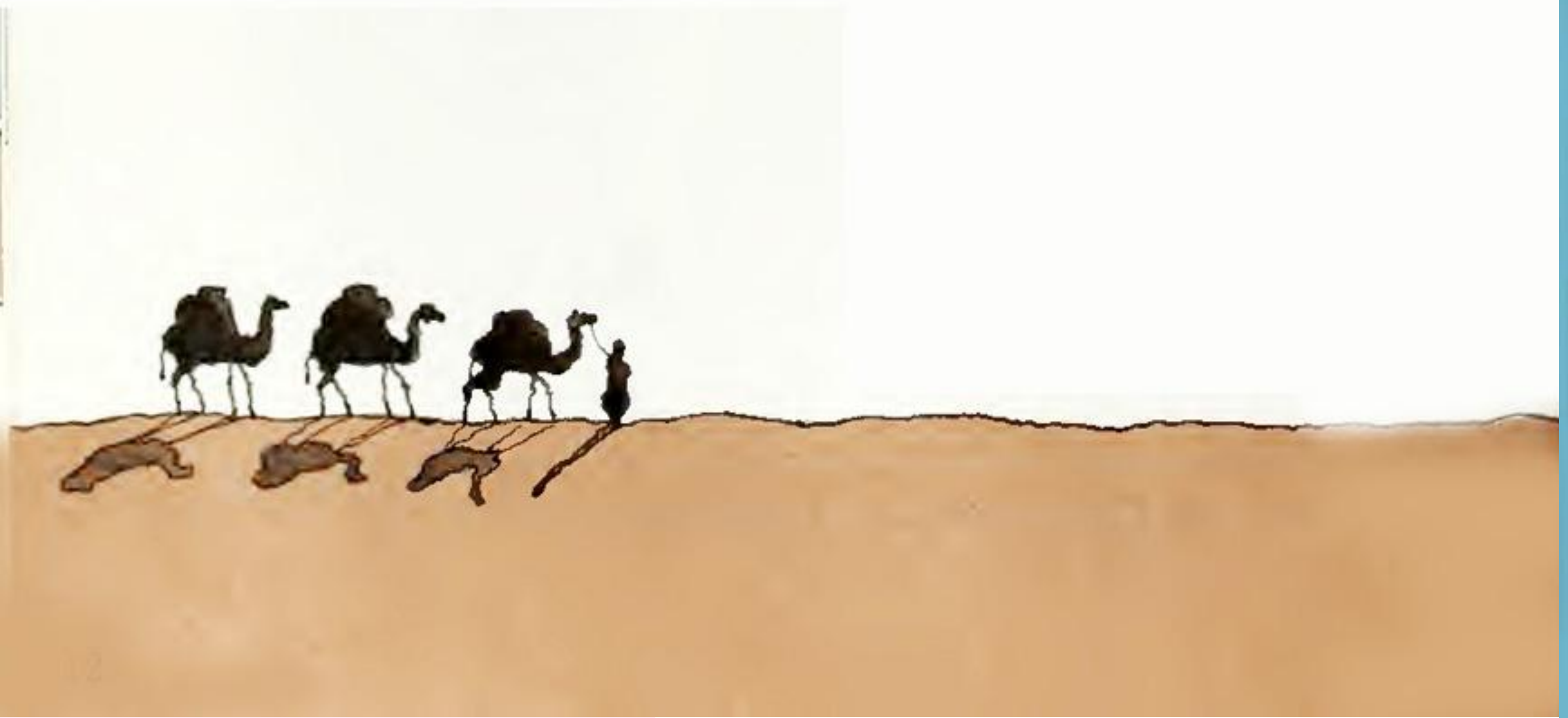
जब आपको पसीना आता है, तो आप पानी खो देते हैं. अगर बहुत गर्मी होगी और आपको बहुत पसीना आएगा, तो आप बहुत अधिक पानी खो देंगे. फिर आपको बहुत पानी पीना पड़ेगा.





रेगिस्तान में सुबह-सुबह ऊंट का तापमान 93 डिग्री फारेनहाइट होता है. दिन के समय ऊंट का तापमान भी बढ़ता है, लेकिन बहुत धीरे-धीरे. ऊंट के तापमान को 105 डिग्री फारेनहाइट तक पहुंचने में देर दोपहर हो जाती है. फिर उसे पसीना आना शुरू हो जाता है. रात में ऊंट का तापमान फिर से 93 डिग्री तक गिर जाता है.



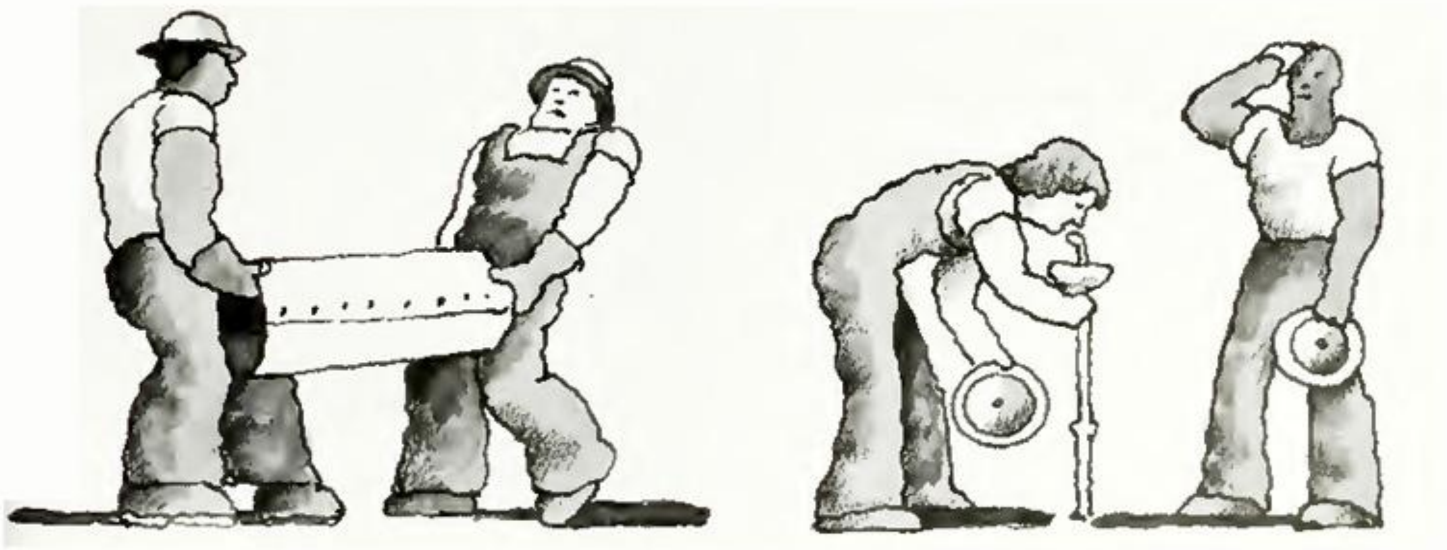






अगर दिन बहुत गर्म होगी, तो आदमी जल्दी गर्म हो जाएगा. उसे पूरे दिन पसीना आएगा.

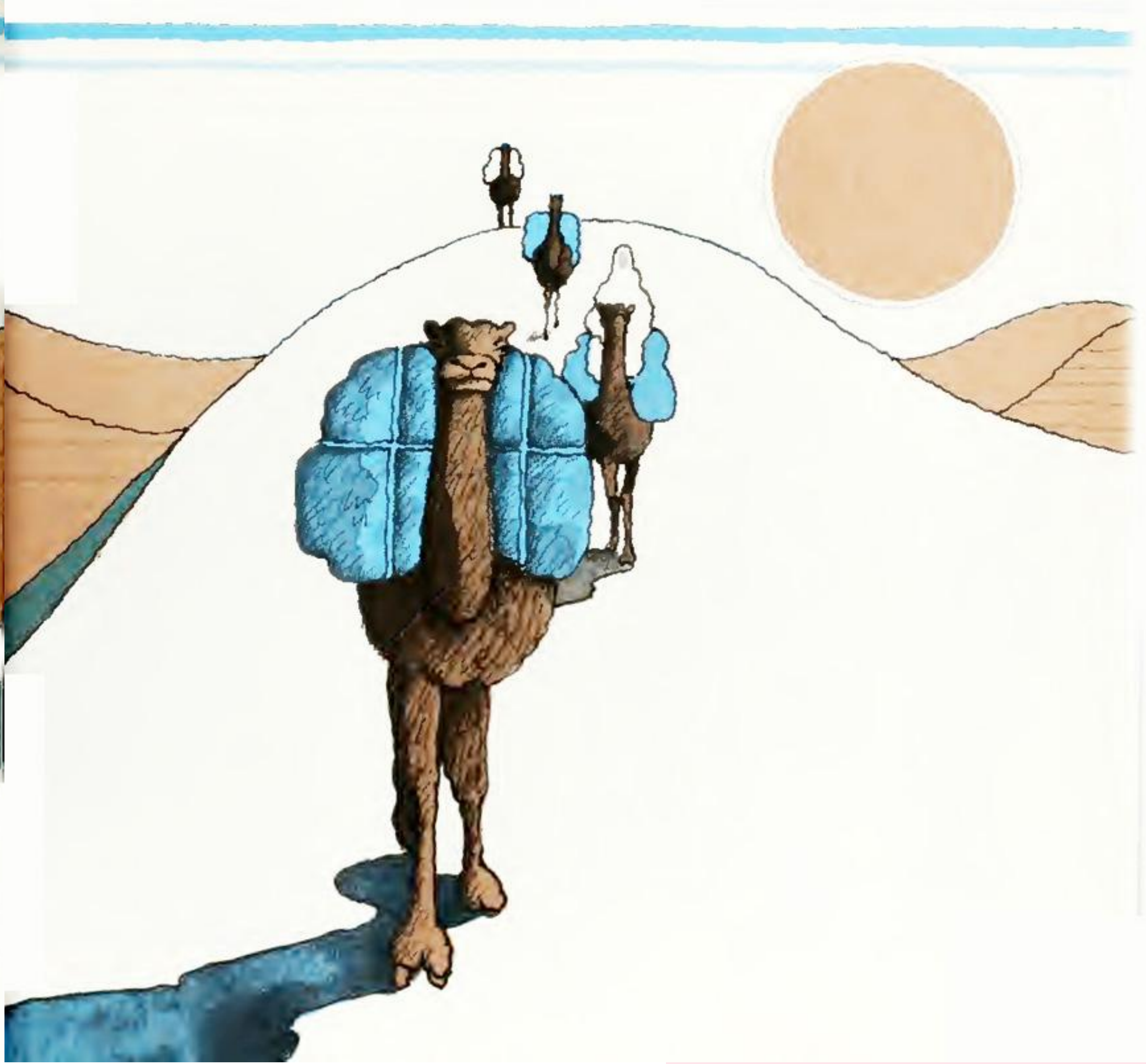
जब आदमी को बहुत पसीना आता है, तो उसका खून बदल जाता है. आदमी का खून ही, गर्मी को उसकी त्वचा तक पहुँचाता है. पसीना, गर्मी से छुटकारा पाने का एक तरीका है. जब उसे बहुत पसीना आता है, तो आदमी जो पानी खोता है, उसका कुछ हिस्सा उसके खून से आता है. उससे उसका खून गाढ़ा हो जाता है. जितना ज़्यादा पसीना बहता है, आदमी का खून उतना ही अधिक गाढ़ा होता जाता है. फिर खून आसानी से त्वचा तक नहीं पहुँच पाता है. तब आदमी गर्मी से छुटकारा नहीं पा सकता है. तब आदमी और ज़्यादा गर्म होता जाता है. अगर तब उसे पानी नहीं मिला, तो उसकी मौत भी हो सकती है.



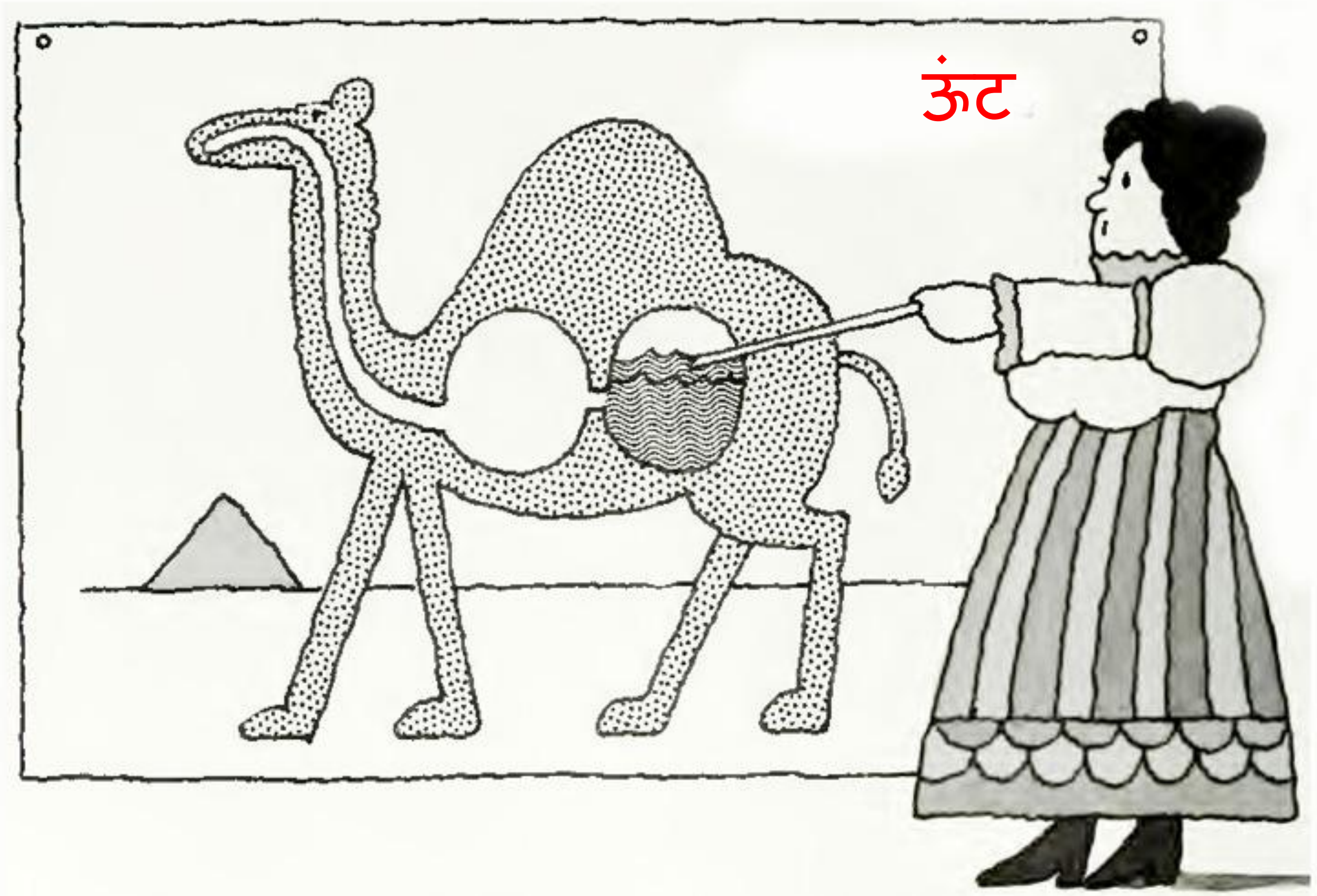


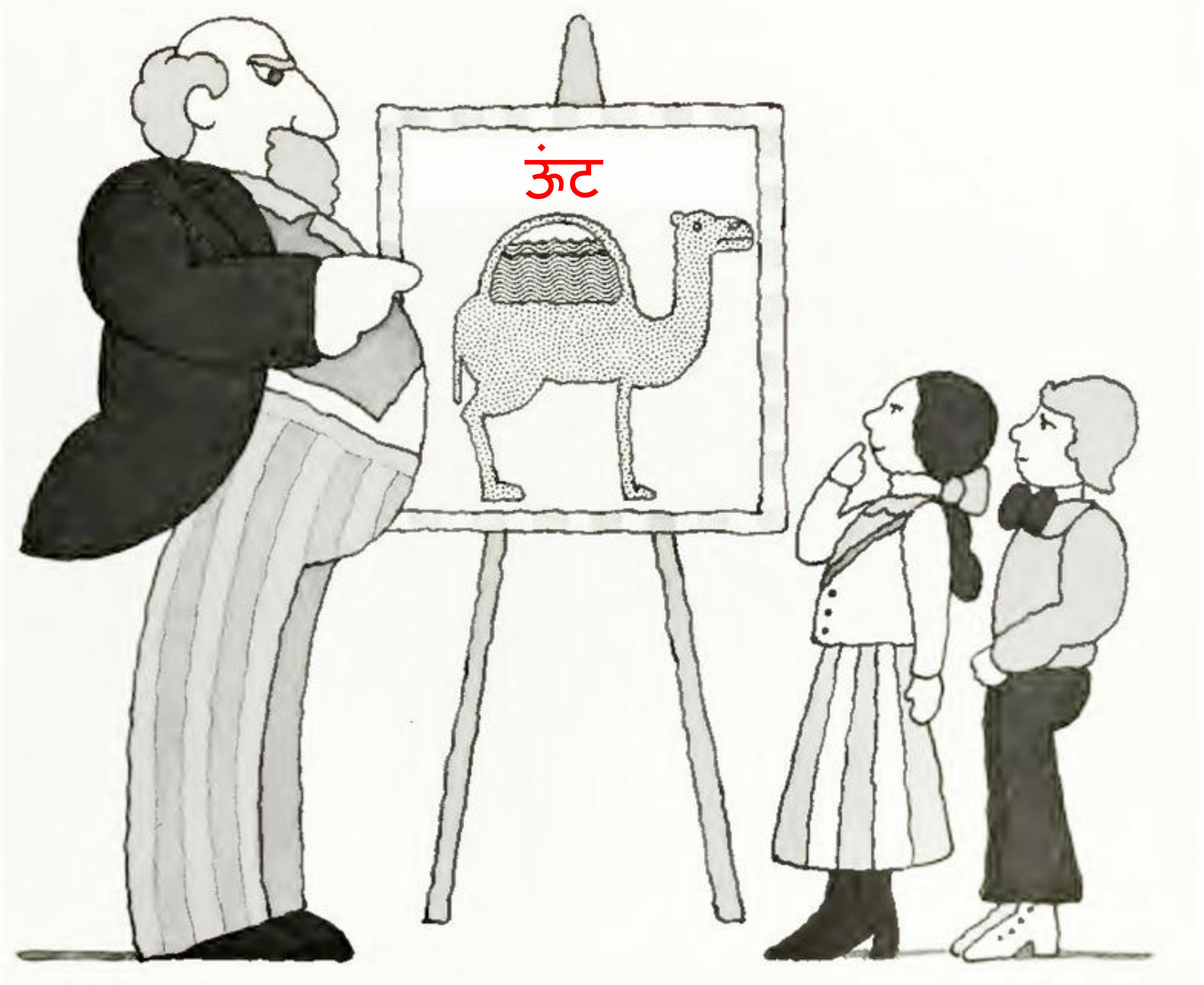
जब ऊंट को पसीना आता है, तो उसका खून नहीं बदलता है. वह जो पानी खोता है, वह उसके खून से नहीं आता है. ऊंट का पानी, शरीर के दूसरे तरल पदार्थों और शरीर की अन्य टिश्यूस (ऊतकों) से आता है. इसलिए ऊंट का खून हमेशा पतला ही रहता है. खून आसानी से उसके शरीर में बह सकता है और उसकी त्वचा में जा सकता है. पसीना, गर्मी को उसके शरीर से लगातार दूर ले जाता है.



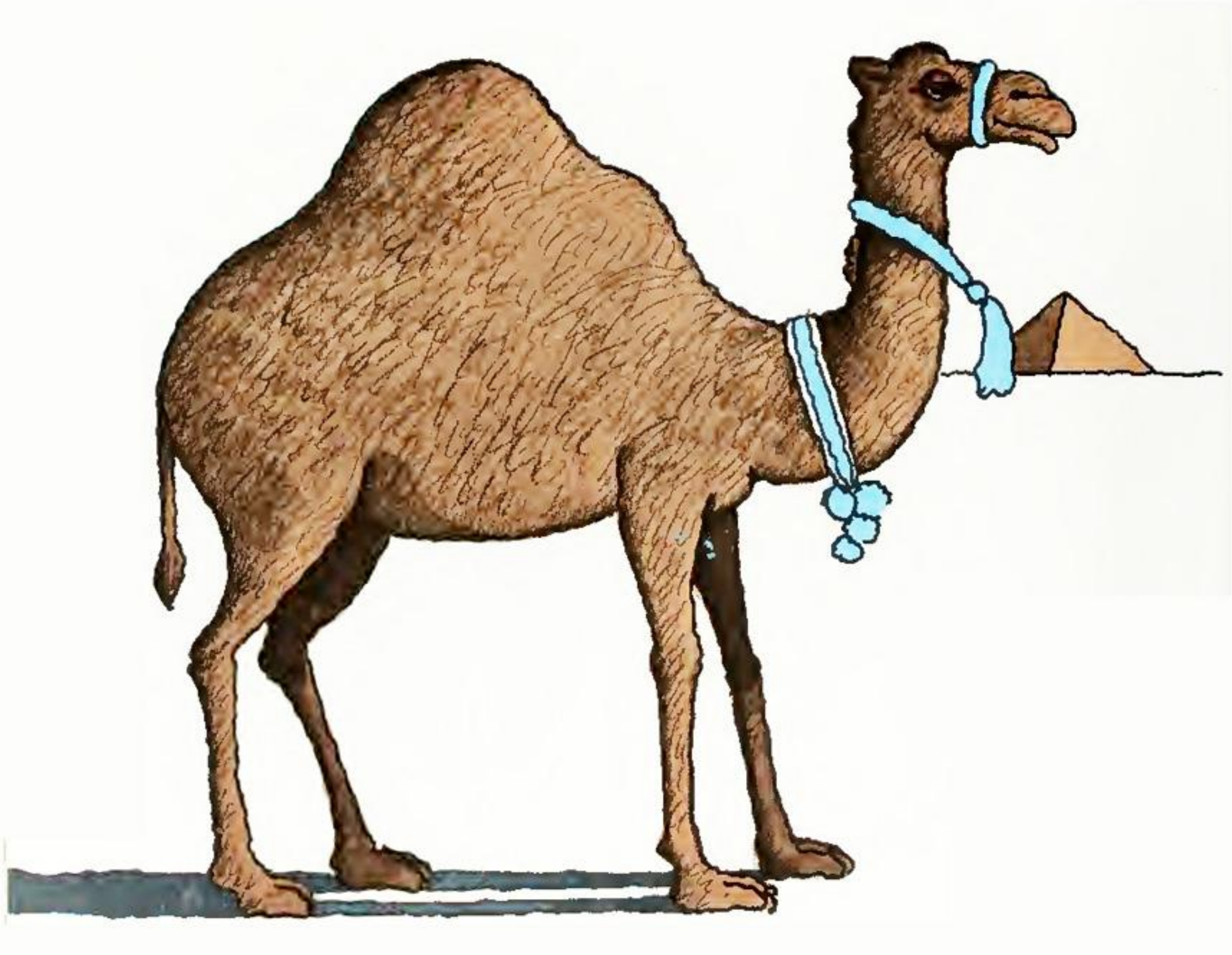


लोग सोचते थे कि ऊंट का पेट एक खास तरह का होगा जिसमें वो पानी इकट्ठा करके रखता होगा. उन्हें लगता था कि ऊंट वहीं पर अतिरिक्त पानी जमा करता होगा. कुछ लोगों को लगता था कि ऊंट अपने कूबड़ में पानी रखता होगा.





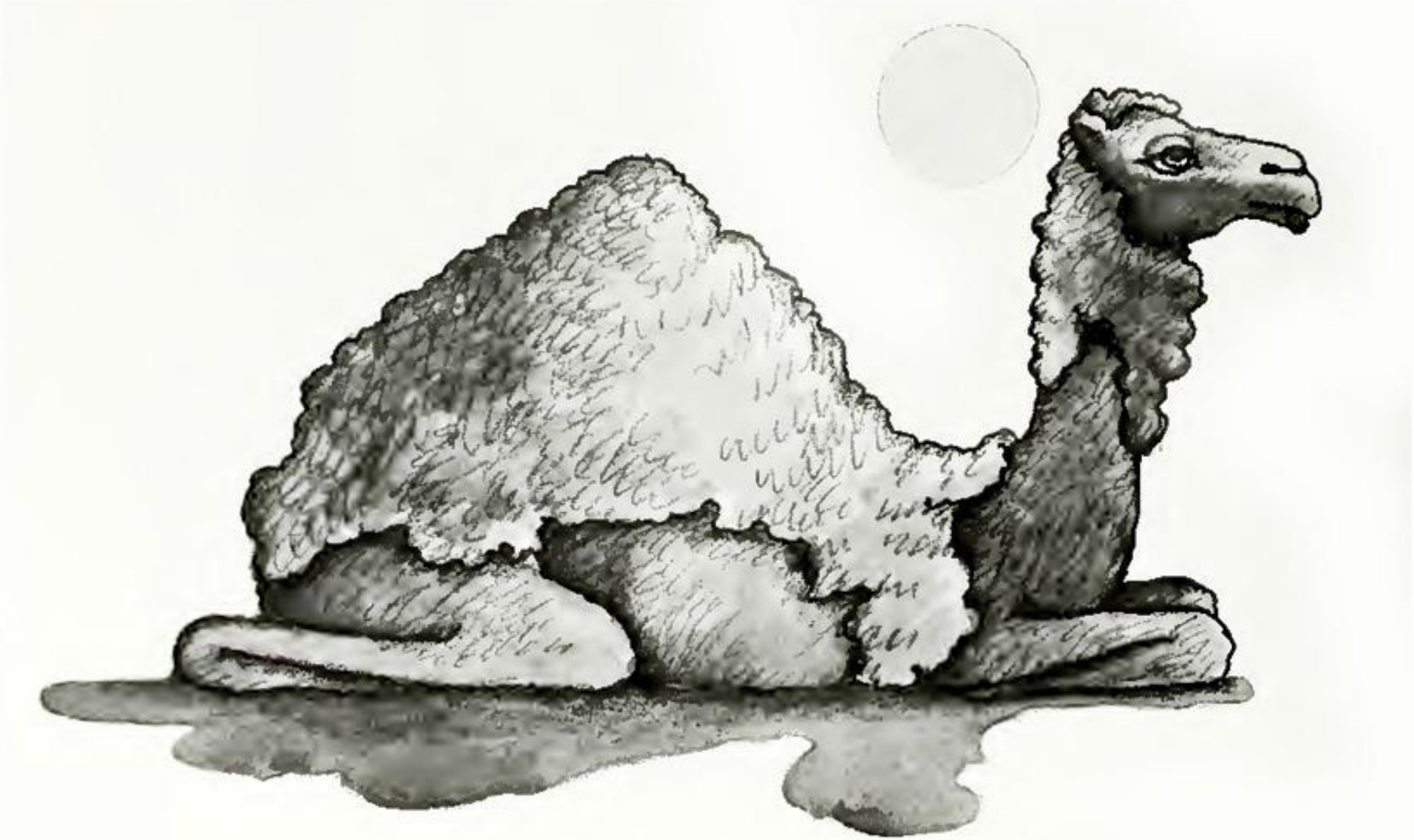
अरबी ऊंटों में सिर्फ़ एक कूबड़ होता है.



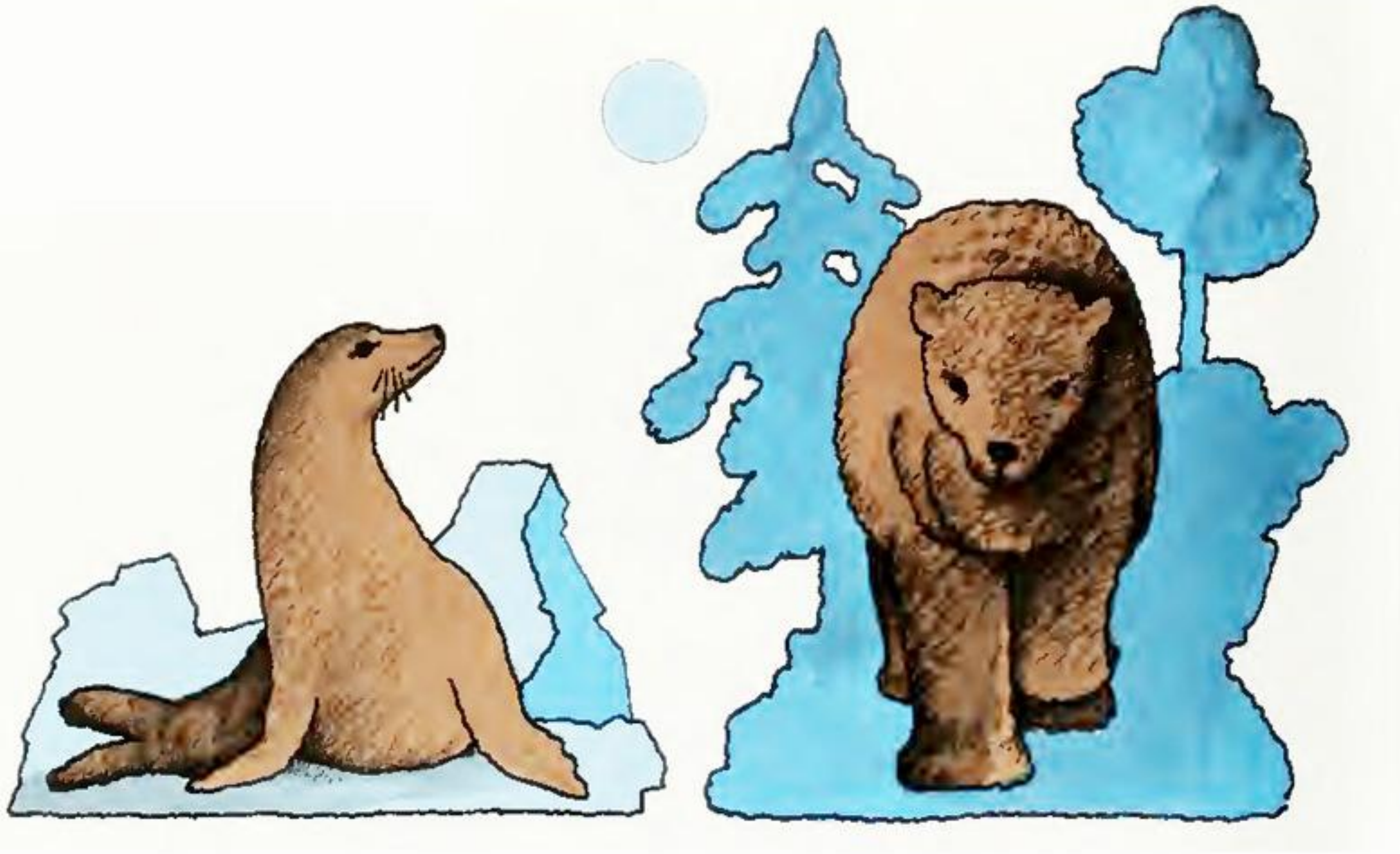
एशियाई ऊंटों के दो कूबड़ होते हैं. कोई भी ऊंट अपने कूबड़ में पानी जमा नहीं कर सकता है. लेकिन ऊंट उतनी तेज़ी से पानी खर्च नहीं करता है जितना मनुष्य करते हैं.



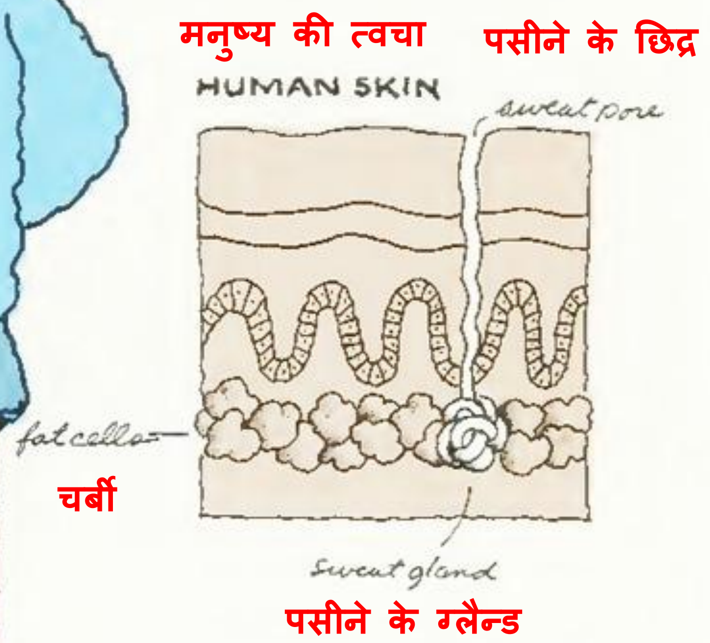
ऊंट के बाल भी उसे ठंडा रखते हैं. ऊंट का शरीर कई इंच मोटे बालों से ढका होता है. बाल तेज़ धूप को ऊंट की त्वचा तक पहुँचने से रोकते हैं. ऊंट के बाल कम्बल की तरह होते हैं. कम्बल, गर्मी को अंदर रखता है. जब आप बिस्तर पर सोते हैं तो आपका कम्बल भी यही काम करता है. लेकिन गर्म रेगिस्तान में, ऊंट के बालों का कम्बल, गर्मी को शरीर से बाहर रखता है.





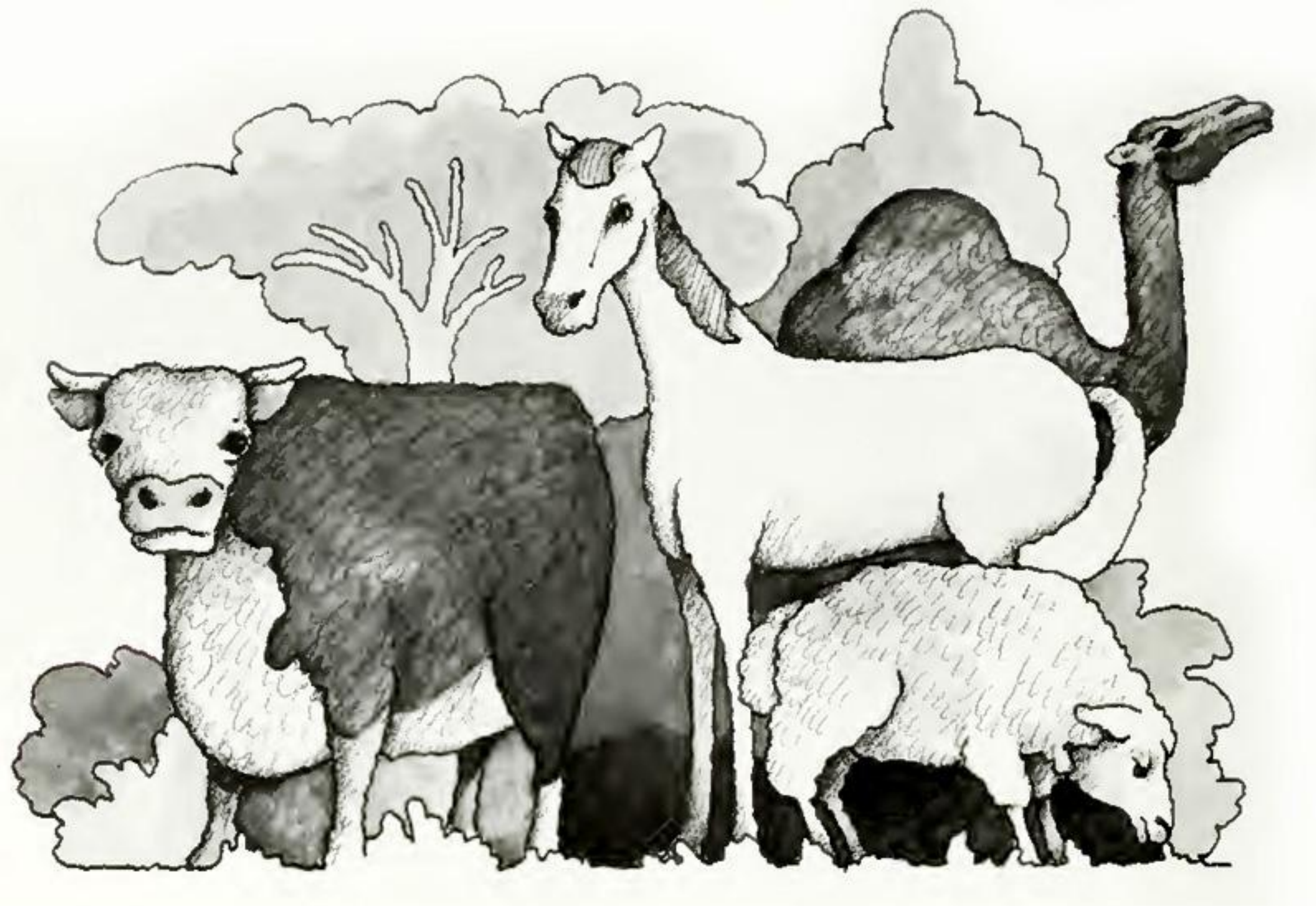


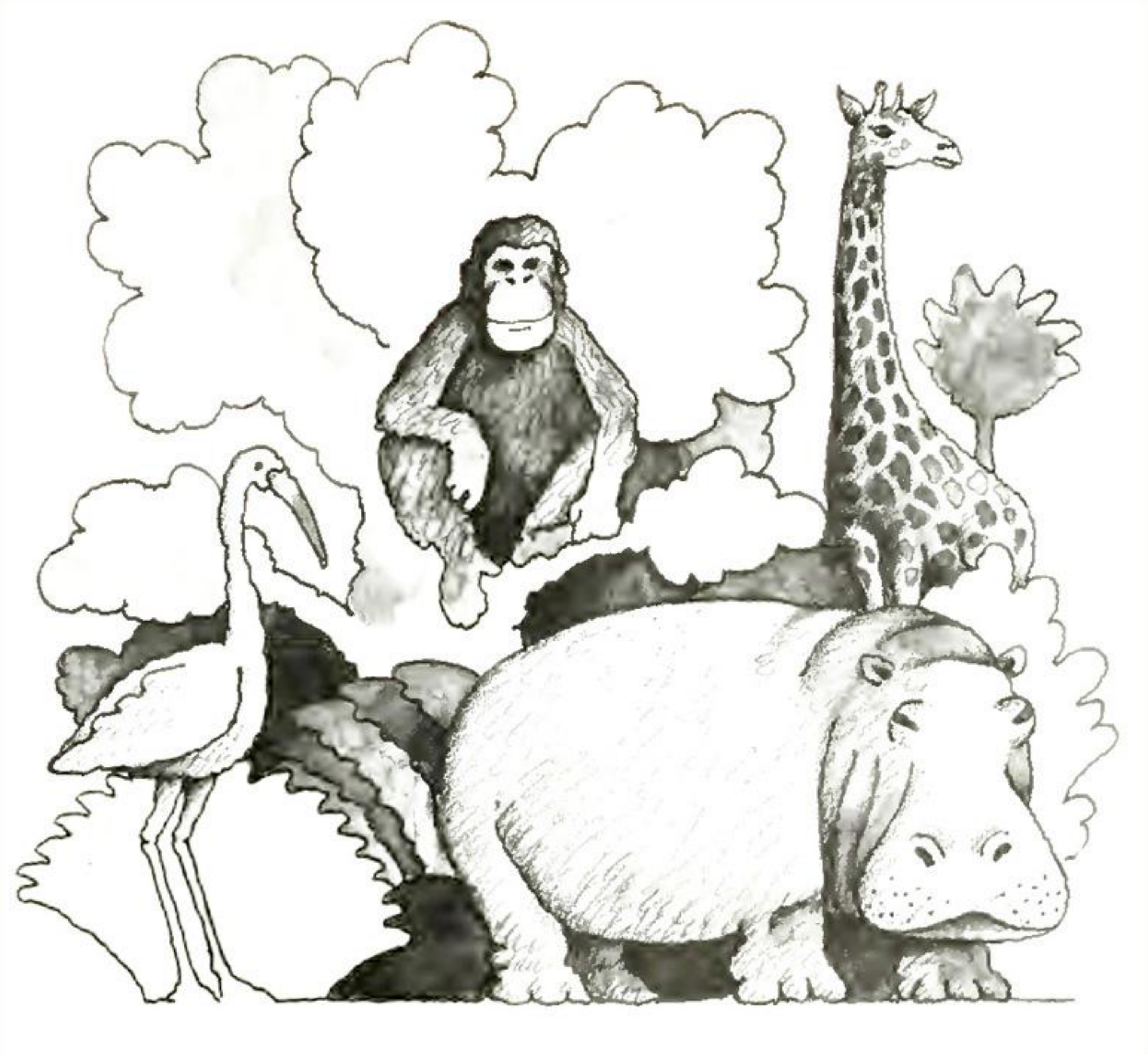




ज़्यादातर जानवरों के शरीर पर चर्बी की एक परत होती है. आपके शरीर में भी चर्बी होती है. चर्बी, त्वचा के ठीक नीचे होती है. चर्बी एक इन्सुलेटर होती है. चर्बी गर्मी को बनाए रखती है और जानवर को गर्म रखने में मदद करती है. ऊंट के पूरे शरीर पर चर्बी की परत नहीं होती है. इसलिए यह अपनी त्वचा के ज़रिए गर्मी को खो सकता है.

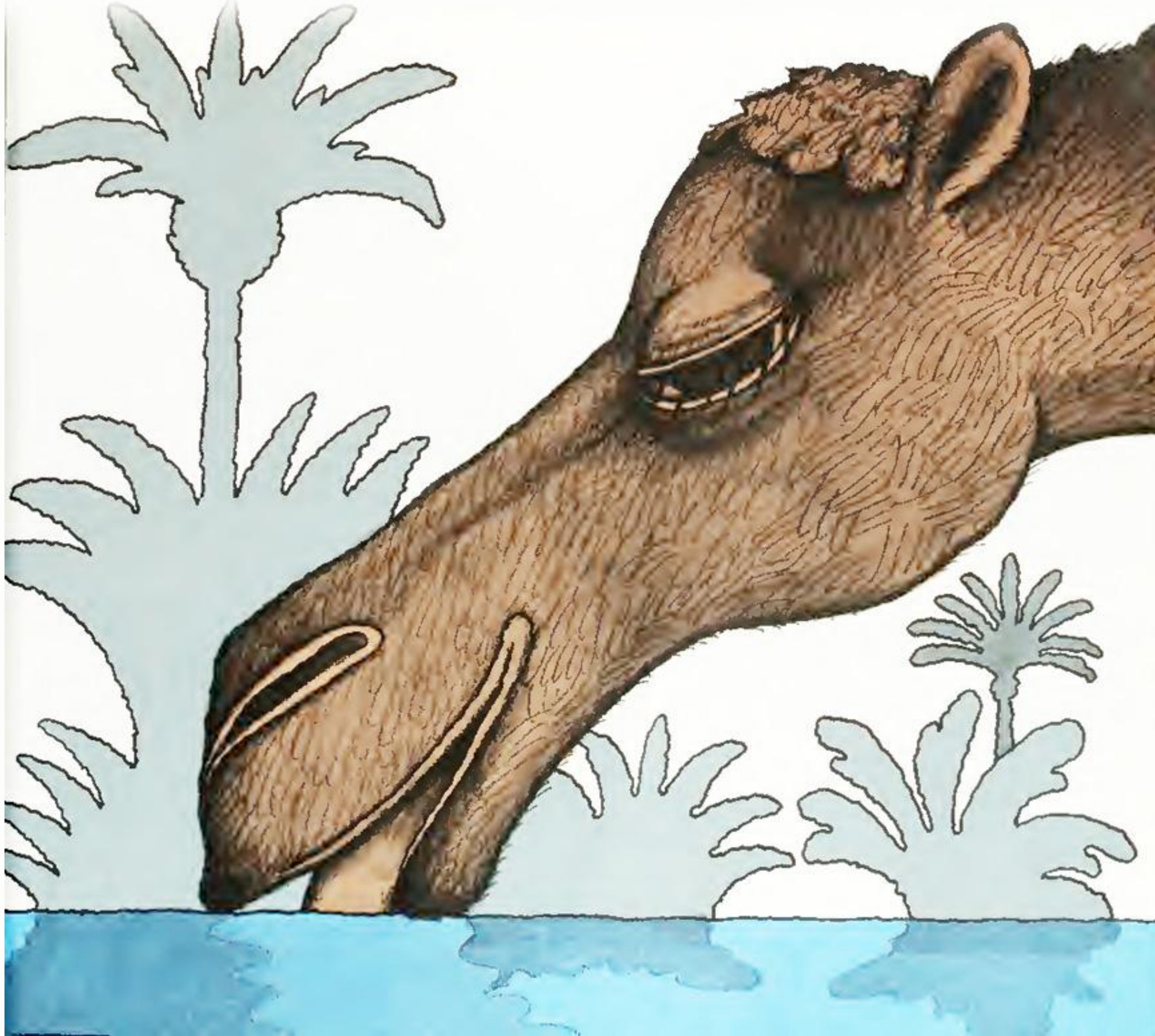
हालाँकि, सभी जानवरों को ज़िंदा रहने के लिए चर्बी की ज़रूरत होती है. ऊंट की चर्बी उसके कूबड़ में जमा होती है. दो कूबड़ वाले ऊंट के दोनों कूबड़ों में चर्बी होती है. अगर ऊंट को नियमित रूप से खाना नहीं मिले तो वो अपनी चर्बी को भोजन में बदल देता है.



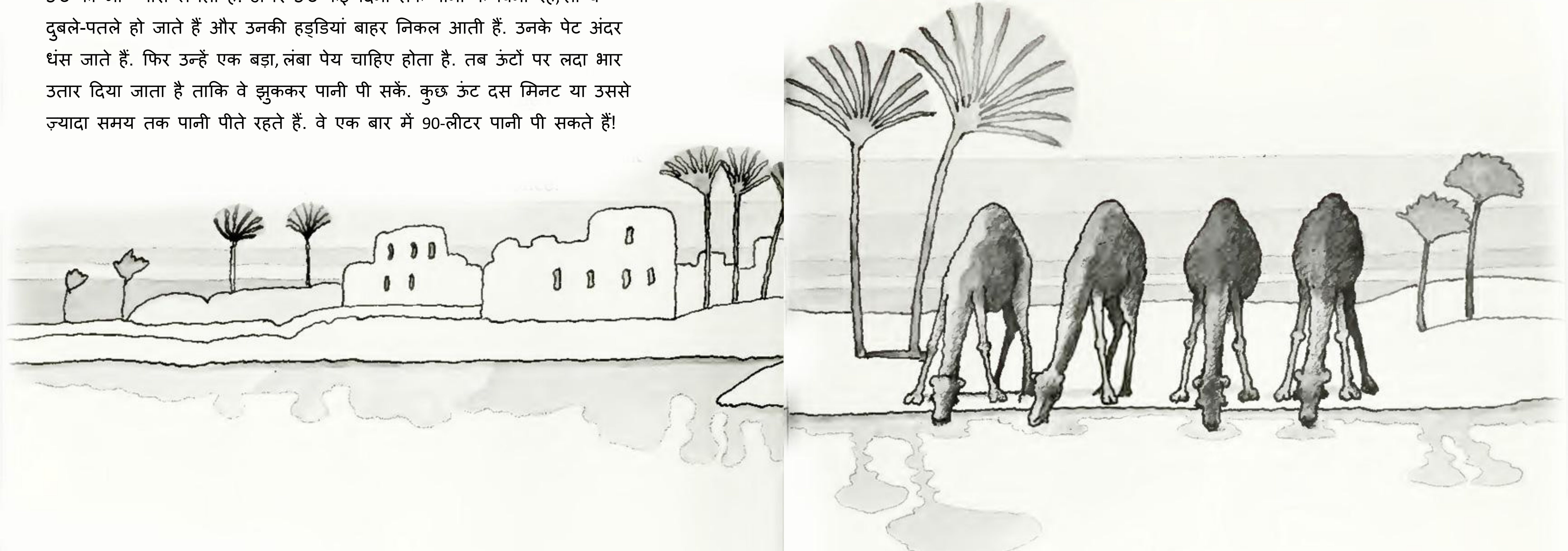




जानवर मल को बाहर निकालने के लिए पानी का इस्तेमाल करते हैं. आप भी ऐसा ही करते हैं. आपके शरीर में मौजूद पानी, उस मल को बाहर निकालता है, जिससे आपको छुटकारा पाना होता है. जब आप पेशाब करते हैं, तो मल आपके शरीर से बाहर निकल जाता है. ऊंट के साथ भी ऐसा ही होता है. सिवाय इसके कि ऊंट बहुत बार पेशाब नहीं करता. लोगों को दिन में चार या पाँच बार मल त्यागना पड़ता है, कभी-कभी इससे भी ज़्यादा बार. ऊंट एक बार में थोड़ा ही पेशाब करता है. इससे उसके शरीर का बहुत पानी बच जाता है.



गर्म रेगिस्तान में आठ दिन या उससे ज़्यादा समय तक यात्रा करने के बाद, ऊंट को भी प्यास लगती है. अगर ऊंट कई दिनों तक पानी के बिना रहें, तो वे दुबले-पतले हो जाते हैं और उनकी हड्डियां बाहर निकल आती हैं. उनके पेट अंदर धंस जाते हैं. फिर उन्हें एक बड़ा, लंबा पेय चाहिए होता है. तब ऊंटों पर लदा भार उतार दिया जाता है ताकि वे झुककर पानी पी सकें. कुछ ऊंट दस मिनट या उससे ज़्यादा समय तक पानी पीते रहते हैं. वे एक बार में 90-लीटर पानी पी सकते हैं!







लंबे समय तक पानी पीने और आराम करने के बाद, ऊंटों की पीठ पर फिर से नमक, अनाज, चटाई, खाल और कई अन्य चीज़ें लाद दी जाती हैं. फिर "रेगिस्तान के जहाज" एक और गर्म, और कभी-कभी पानी रहित, लम्बी यात्रा के लिए तैयार हो जाता है.